IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक सामाजिक परिवर्तन और मुस्लिम महिलाएं

शोध निर्देशिका
डा0 प्रभा शर्मा
प्राचार्या, राजकीय
महाविद्यालय, सम्भल

दिनेश शर्मा
शोध छात्र समाजशास्त्र
राज0म0 स्नातक0 महाविद्यालय, रामपुर
(महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड
विश्वविद्यालय, बरेली)

सारांश – प्रस्तुत लेख में आधुनिक सामाजिक परिवर्तन और मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक जीवन में परिवर्तन आ रहा है, मुस्लिम महिलाओं ने पढ़ना लिखना प्रारम्भ कर दिया है यद्यपि शिक्षा की गति अभी बहुत धीमी है, कुछ महिलाएं शिक्षित एवं आत्मनिर्भर होकर सरकारी, गैर सरकारी, व्यवसाय, संवैधानिक निकाय, राजनीतिक क्षेत्र, साहित्यकला, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय खेल, चिकित्सा इत्यादि क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही है। इस्लामिक राष्ट्रों में जैसे सऊदी अरब, ईराक, ईरान, पाकिस्तान अफगानिस्तान इत्यादि राष्ट्रों ने महिलाओं को राष्ट्र के विकास में मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है। वतर्मान समय में मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन काफी अच्छी हो रही है, महिलाएं विकास के पथ पर अग्रसर हो रही हैं।

मुख्य शब्द– जागरुकता, शिक्षा, स्वास्थ, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास

परिवर्तन प्रकृति और जीवन का साश्वत नियम है। मुस्लिम महिलाओं के जीवन में भी यह परिवर्तन अपने परिवेशगत दशाओं के अनुसार होता है परिवर्तन तेज हो या धीमी पर परिवर्तन, परिवर्तन है। संस्कृति भी अपरिवर्तनशील नही है क्योंकि संस्कृति स्वयं गतिशील है, इसलिए स्त्री या पुरुष किसी का जीवन भी गतिहीन नहीं हो सकता।

आज इस्लाम संस्कृति एक संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं और यह परिवर्तन संस्करण एवं स्वांगीकरण के रूप में दिखाई दे रहा है यह संरचनात्मक परिवर्तन सामाजिक अन्तक्रियाओं का परिणाम है जिसमें दवाब भी अनुभव किये जाते हैं। वर्तमान में अधिकांश मुस्लिम महिलाएं शिक्षित होकर समाज में तथा लोगों के सम्पर्क में आ रही है। वे सरकारी गैरसरकारी संवैधानिक निकाय, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में कार्य कर रही है इस अन्तक्रिया से महिलाओं में अन्तर परिवर्तन हो रहे है।[1]

अतः मुस्लिम महिलाओं में पारिवारिक, कौमी तथा सामाजिक संस्थागत, संरचनात्मक परिवर्तन दृष्टि गोचर हो रहे हैं। मुस्लिम महिलाओं ने पढ़ना लिखना प्रारम्भ कर दिया है यद्यपि शिक्षा की गति बहुत धीमी है, तथापि महिलाओं ने शिक्षा के महत्व को अनुभव किया है और कुछ महिलाएं राजनीतिक भी हो रही है परन्तु अभी ऐसी महिलाओं की संख्या उत्साहपूर्ण नही है।

बीसवीं सदी में नारी मुक्ति के संदर्भ में दो महिलाओं का योगदान ऐतिहासिक कहा जा सकता है–पहला फ्रांस में सिमोन द बोबुआर तथा दूसरा, रूस में अलेक्जाद्रा कोलोतलाई। इन दोनों ने नारी जाति को हर तरह से मुक्त करने के लिए हर तरह के प्रयास किये और साबित कर दिया कि नारी को गौण समझा जाता है जबकि वह किसी भी तरह द्वितीयक नहीं है। तब से नाारियों ने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और कौशल का परिचय देना शुरू कर दिया है। परन्तु पुरुष मानसिकता आज भी पूरी तरह उन्हें बराबरी का दर्जा देने को तैयार नही है।[2]

भारतीय परिवेश में स्त्री शिक्षा और उनके विकास को लेकर बात की जाए तो नवजागरण में इसके बीज देखने को मिलते हैं। परन्तु मुस्लिम शिक्षा को यदि ध्यान में रखकर देखा जाए तो इसके कुछ बहुत ज्यादा सूत्र नही मिलते मुस्लिम परिवारों में स्त्री शिक्षा एवं विकास के प्रति बहुत अधिक चेतना नही है अधिकांश अपने घर की लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा तक पढ़ाने को लेकर ही सचेत है। स्त्रियों के प्रति इनकी जो रूढ़िगत धारणाएं है, वे इनको उच्च शिक्षा तथ राजनीति एवं आर्थिक प्रगति के लिए प्रेरित नही करती अतः अशिक्षित महिलाएं समाज की व्यावहारिता को समझ नही पाती। मुस्लिम परिवारों में पर्दा प्रथा और कम उम्र में शादी कर देना भी इनका अशिक्षित होने का एक कारण है। मुस्लिम महिलाओं का शोषण दोनों (आंतरिक व बाह्य) स्तर पर होता है। मुस्लिम पुरुष अधिकांशतः इस्लाम की दुहाई देकर अपने घर की महिलाओं को दबाते है।

अपनी रूढ़ मानसिकता के कारण स्त्री के पक्ष या उसके विकास, स्वतंत्रता शिक्षा आदि के बारे में सोचने को तैयार नहीं है जबकि इस्लाम में सभी को विकास का तथा शिक्षा के लिए लिंग, आयु और स्थान किसी भी तरह भेद नहीं किया गया है। मोहम्मद साहब ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूरी को भी अड़चन नहीं माना है।

आधुनिक समय में मुस्लिम स्त्रियां साहित्य, कविता कला, चिकित्सा गणित के क्षेत्र में अपना स्थान बना रही है जबकि कुछ कट्टरपंथी मौलवियों ने स्त्री के लिए धार्मिक शिक्षा को ही उचित ठहराया। पितृसत्तात्मक मुस्लिम समाज कही न कही अपने अस्तित्व को लेकर डरा हुआ है, चूंकि वह स्त्री से अपने को नीचे नहीं देख सकता इसलिए उसने अपने आपको बचाने और अपना दबदबा स्त्रियों पर कायम रखने के लिए धर्म का सहारा लिया। कट्टरपंथी मौलवियों ने कुरान की आयातों का गलत विश्लेषण कर कम पढ़े–लिखे वर्ग को बेवकूफ बनाया है। इस्लाम में औरतों को सामाजिक आर्थिक शैक्षिक विकास जितना जरूरी बताया गया है उसके विपरीत संकीर्ण मानसिकतावादियों ने उसे खास जरूरी न कहकर घरेलू व धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने पर अधिक बल दिया है।[3]

वह औरत को घर से बाहर न निकलने की हिदायत देते है तथा अपने को स्वतंत्र रखने पर अधिक बल देते है। मुस्लिम धार्मिक कट्टरपंथियों ने धर्म का सहारा लेकर स्त्रियों की शिक्षा तथा विकास का अधिकार छीन लिया है। इसका विरोध करते हुए **जोया हसन** लिखती है कि ''मुस्लिम औरत का हिन्दुस्तान में आगे न बढ़ने का तथा शिक्षा प्राप्त न करने का मूल कारण गरीबी है। मुस्लिम औरतों के शैक्षिक स्तर में कुछ हद तक सुधार हुआ है लेकिन उतना नही जितना कि जनसंख्या के हिसाब से उनकी संख्या है। उनके विकास में सबसे बड़ी बाधा सामाजिक स्थिति का निम्न होना है धर्म और पर्दा उतना बड़ा कारण नहीं। सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को नजर अंदाज कर मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को ठीक से नही समझा जा सकता।[4]

वर्तमान समय में औरतें जागरूक हो रही है तथा अपने अधिकारों की मांग करने लगी है। उन्होंने शिक्षा के महत्व को भी समझना शुरू कर दिया है। शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। कुछ शिक्षित मुस्लिम परिवारों में पर्दा प्रथा धीरे–धीरे घटती जा रही है। क्योंकि आज लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरियां भी कर रही है, वह ऊंचे पदों पर भी है। वे बुर्का पहनकर पुरुषों के साथ समाज में कार्य कर रही है। महिलाओं में यदि एक परिस्थिति ने बुर्का या पर्दा–प्रथा चलाई थी तो आज की प्रगतिशील सोच

और परिस्थिति ने पर्दा–प्रथा को कम भी किया है। जैसे–जैसे हमारे देश की मुस्लिम महिलाएं विकासगत होगी शिक्षित होकर कामकाजी महिलाएं बनेगी पर्दा प्रथा स्वतः ही कम हो जाएगी। यह जागरूकता, शिक्षित और प्रगतिशील समाज के लिए ही आवश्यक नही हैं, वरन् परिवार की उन्नति के लिए भी बहुत आवश्यक है।[5]

भारत में मुसलमान स्त्री की स्थिति की विवेचना करने के लिए **शाहिदा लतीफ** अपनी पुस्तक : **मुस्लिम वीमेन इन इंडिया पोलिटिकल एंड प्राइवेट रियलिटी**, में 20वीं सदी में आये सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों को भूमिका के रूप में देखती है। उनका कहना है कि इन परिवर्तनों के कारण विभिन्न, जातियों, समुदायों की आपसी निर्भरता और असमानता के पारंपारिक संबंधों में टूटन आई है। पहले इन संबंधों का आधार कृषि भूमि थी। अब उसकी जगह व्यापार और उद्योग, पूंजी तथा प्रतिष्ठा अर्चन का माध्यम बन गए। उद्योग, व्यापार तथा सेवा के क्षेत्र के अविर्भाव के साथ–साथ पारंपरिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ढांचे में बदलाव आए, जिससे पारंपरिक जातीय और सामुदायिक समीकरण बदलने लगे। आर्थिक और राजनीतिक आधार मजबूत करने के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी। विभिन्न जातियां और समुदाय जातीय सामुदायिक दवाब बनाकर राजनीतिक और आर्थिक नीतियों को अपने हित में प्रभावित करने लगे।

आजादी के पूर्व भारतीय नारी की स्थिति में मुख्यता वर्ग, क्षेत्र और जाति के आधार पर तो फर्क था परन्तु धर्म के आधार पर कोई बुनियादी फर्क नहीं था। पर्दा तथा स्त्री को घर की चारदीवारों में बन्द रखने का रिवाज दक्षिण की तुलना में उत्तर भारत में अधिक था। इसी प्रकार बाल विवाह, बहुपत्नी प्रथा इस वर्गो और क्षेत्रों में अधिक प्रचलित थी। लेकिन कुछ भूमिकाएं पूरे भारतीय समाज में केवल स्त्रियां ही निभाती थी। एक परिभाषित रोल मॉडल जिस पर हर स्त्री को खरा उतरना होता था। इस रोल मॉडल के विपरीत आचरण परिवार और समाज की शान के खिलाफ माना जाता था। इस रोल मॉडल से मुसलमान औरतें अछूती नहीं थी। हालांकि सैद्धान्तिक रूप से उन्हें सम्पति, तलाक, पुनर्विवाह, तलाक के समय मेहर का अधिकार था परंतु व्यवहार में इन अधिकारों संबंधी कुरान के नियमों को लागू नहीं किया जाता था।

शहीदा लतीफ कहती है कि क्षेत्रीय विषमताएं मुसलमान स्त्रियों की भूमिका को दो प्रकार से प्रभावित करती है। सांप्रदायिक तनाव वाले क्षेत्रों में मुसलमान, समाज को नए परिवर्तनों के अनुसार अपने को ढालने के लिए संस्थाएं बनाने में हिचकता रहा। दूसरा, क्षेत्र विशेष को नारी के लिए नजरियों और रीति–रिवाज का भी

उस क्षेत्र की मुसलमान स्त्रियों पर प्रभाव पड़ा है। इस संदर्भ में स्त्रियों का आर्थिक वर्ग भी महत्वपूर्ण है। आर्थिक हैसियत ही संसाधनों की उपलब्धता निर्धारित करती है।[6]

वर्तमान समय में इस्लाम के बारे में जो भ्रान्तियां पाई जाती है इन्हें जान–बूझकर एवं अपने समुदाय के विभिन्न कट्टपंथी लोगों के द्वारा उत्पन्न किया जाता है। इस सभी भ्रान्तियों में उनमें से एक यह भी है कि इस्लाम ने महिलाओं को पुरूषों के बराबर अधिकारों का दर्जा नही दिया। पुरूष के बराबर दर्जा नही दिये जाने से उनकी विकास दर पर इतनी पाबन्दियां लग गयी है कि वे जिन्दगी के विकास रूपी समय में अनिवार्य रूप से पीछे रह गयी है और सदैव पुरूष के अधीन जीवन बिताने पर अपने आप को मजबूर पाती है। जबकि सच्चाई यह है कि इस्लाम धर्म दुनिया का एक मात्र वह धर्म है जिसने सर्वप्रथम पुरूष एवं महिला की बराबरी की आवाज उठाई और कहा कि खुदा (अल्लाह) की नजर में महिला एवं पुरूष बराबर है और उनकी सफलता एवं विफलता के सिद्धान्त भी एक है, पर वह वर्तमान युग के इस समता सिद्धान्त को गलत समझता है कि दोनों को एक मैदान में काम की आज्ञा होनी चाहिए, कि महिलाओं के बिना समता नहीं पाई जा सकती इस्लाम की दृष्टि से महिला को घर की जिम्मेदारी एवं पुरूष को घर के बाहर की जिम्मेदारी उठानी चाहिए, इसलिए दोनों के कार्य क्षेत्र स्वभावतः भिन्न–भिन्न है। महिला पर घर का दायित्व देने से उसके आर्थिक प्रयत्नों पर प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए इस्लाम धर्म ने केवल यही नही कि उसे आर्थिक रूप से गारंटी दी बल्कि सामाजिक तथा सामूहिक दृष्टि से भी बहुत ही ऊंचा स्थान प्रदान किया।

इस्लाम में महिला पर घर की जिम्मेदारी डालने का अर्थ यह बिल्कुल नही है कि घर गृहस्थी के अतिरिक्त दुनिया के सारे काम उसके लिए वर्जित है। इस्लाम का उद्देश्य केवल यह है कि महिला मूलतः घर की मालकिन है, वही उस का प्रबन्ध चलाती है, उसे बाहर की दुनिया को आबाद करने की चिंता में अपनी गृहस्थी को बर्बाद नही कर देना चाहिए। घर के दायित्व पूर्ण करने के पश्चात् वह अपनी परिस्थितियों, रूचियों तथा रूझानों की दृष्टि से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में दिलचस्पी ले सकती है।

यह करना गलत नही होगा कि आधुनिक समय में मुस्लिम महिलाओं ने अपने–अपने स्वाभाविक कार्य क्षेत्र में काम करते हुए अन्य क्षेत्रों में सचमुच दिलचस्पी ली और वर्तमान समय में अनेक महिलायें राष्ट्रीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक आश्चर्यजनक रूप से कार्य कर रही हैं।[7]

आज परिवर्तन के दौर में मुस्लिम महिलाएं को इस बात से इंकार नही किया जा सकता कि वैवाहिक जीवन और पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा, रोजगार तथा विकास के साथ–साथ अपने कैरियर के प्रति निरंतर चेतना का विकास हो रहा है। इसके फलस्वरूप मुस्लिम समाज में एक नवीन सामाजिक घटना उभर रही है। आजादी के बाद जैसे–जैसे हमारा पाश्चात्य देशों से सम्पर्क बढ़ा तो उसी पाश्चात्यकारण के प्रभाव से भारतीय मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा का प्रसार धीरे–धीरे बढ़ना प्रारम्भ हुआ और इस शिक्षा के प्रभाव ने धर्म के दायरे में सिमटी मुस्लिम महिलाओं की विचार धाराओं में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

अन्य धर्म की महिलाओं को देखकर मुस्लिम महिलाओं में भी अपने अधिकारों की जागृति और खुलेपन की चाह सामान्य रूप से बढ़ रही है। वैसे तो प्राचीन काल से मुस्लिम समाज ने महिलाओं को उनकी शारीरिक रचना के कारण पुरूषों की तुलना में निम्न माना है। वर्तमान दौर के औद्योगिक विकास के साथ–साथ मुस्लिम समाज में महिलाओं के प्रति–सोच में परिवर्तन आया है और महिलाओं को अपने अधिकार और न्याय प्राप्त होने लगा है। इस्लाम धर्म में उन्हें पूरी स्वतंत्रता सुरक्षा एवं बराबरी के अधिकार प्राप्त है, कोई भी इस्लामी सामाजिक नियम मुस्लिम महिलाओं और पुरुषों में भेदभाव नही करता है।[8]

मुस्लिम समाज में इस सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव शहरी शिक्षित मुस्लिम महिलाओं और उनसे विशेष रूप से मध्यम वर्गीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न वर्गीय महिलाओं पर अधिक पड़ रहा है, जिसका असर केवल भारत में ही नही, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर भी नजर आ रहा है। जहां, पिछले वर्ष यूरोप के कई मुस्लिम देशों में मुस्लिम महिलाओं को बंदिशों से मुक्ति के समाचार मिले वही अफ्रीका के मजिस्द में सुधार के लिए आन्दोलन चल रहा है। इसमें धार्मिक अनुष्ठानों में महिलाओं की बराबरी की भागीदारी सुनिश्चित करने पर अहम् बल दिया जा रहा है, इतना ही नही अफ्रीका के कई चर्चित शहरों में शुक्रवार की नमाज से पूर्व का बयान (उपदेश) अब महिलाओं के जिम्मे है। दूसरी ओर न्यूयॉर्क में महिला ने शुक्रवार को सार्वजनिक नमाज भी पढ़ाई जिसमें लगभग 150 महिला पुरुषों ने भाग लिया।

अब वर्तमान में महिलाओं के आधुनिक सामाजिक परिवर्तन में इस समय मुस्लिम देश सऊदी अरब में महिलाओं को स्वतंत्र रूप से गाड़ी चलाने एवं नौकरी में विभिन्न प्रकार की छूट देने तथा उन सभी महिलाओं को शिक्षा पर विशेष बल दिया है जो आज मुस्लिम महिलाओं के विकास में मुस्लिम राष्ट्र अग्रसर हो रहे है। तथा सऊदी अरब में अब महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी हो गयी है।[10]

मुस्लिम देश अफगानिस्तान ने अपने सैन्य विभाग में महिलाओं की भर्ती भी जारी कर दी है जिससे महिलायें राष्ट्र के विकास में योगदान कर रही है।[11]

मुस्लिम जगत में लिंग भेद का अध्ययन करने वाली एक अध्येता का मानना है कि मुस्लिम महिलाएं घरों में लगी बंदिशों को तो लांघ ही रही है, बल्कि सावर्जनिक अवसरों पर भी समान अधिकारों की मांग कर रही है। उनका मानना है कि मुस्लिम समाज में लोगों की मानसिकता तेजी से बदल रही है अब यह अलग बात है कि मुस्लिम महिलाओं को अपने अधिकारों को पाने में कई तरह की कठिनाईयों और विरोध का सामना करना पड़ा रहा है जो समाज में उनके लिए प्रतिबंध था।[12]

रूढ़िवादी परम्परा को तोड़ना कोई आसान काम नही है इसके लिए महिलाओं ने लम्बे समय से संघर्ष किया है। इन रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़ना विशेषकर लड़कियों के लिए तो असम्भव सा ही है फिर भी सानिया मिर्जा, मलाला, बहीदा प्रिज्म तथा शाहनाज इत्यादि मुस्लिम महिलाओं ने साहस का परिचय दिया, इतना ही नहीं इन्होंने मौका मिलते ही बुलदियों की ओर छलांग लगा दी। विश्व में उनको बड़े ही सम्मानित से देखा जाता है। आज महिलायें इस विकास के दौर में अन्य महिलाओं की तरह कवि वैज्ञानिक, क्रिकेटर अभिनेती या फैशन डिजाइनर मीडिया हो या फिर राजनीति में सर्वोच्च न्यायालय आदि क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाएं भी अपनी पहचान बना रही है। जहॉ सौन्दर्य प्रसाधन में शहनाज हुसैन, खेल में सानिया मिर्जा तथा महिला शिक्षा के विकास में मलाला आदि ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम रौशन कर प्रगतिशील की श्रेणी में शामिल हो गयी है।[13]

बदलते परिवेश में मुस्लिम महिलाओं के जीवन का धरातलीय निरीक्षण तथा सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने पर शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि आज मुस्लिम महिलाएं भी विकास के पथ पर अग्रसर है चाहें वह कोई भी क्षेत्र हो लेकिन कुछ बाधाओं के कारण सभी महिलाओं को इसका अवसर अभी प्राप्त नही हो

पा रहा है। मुस्लिम महिलाएं बदलते समय के साथ–साथ उपभोक्तावादी समाज का हिस्सा बन रही है। मुस्लिम महिलाएं तमाम धार्मिक व सामाजिक दवाब के वाबजूद पुरूष के समान सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही है क्योंकि मुस्लिम समाज में महिलाओं को बाहरी परिवेश में कार्य करने की अनुमति बहुत कम दी जाती है। फिर भी आज का भारतीय मुस्लिम समाज अपनी पुरानी विचारधाराओं एवं परम्पराओं को पीछे छोड़ने का प्रयास कर रहा है।

मुस्लिम महिलाओं को पुरूषों के बराबर वैधानिक राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वतंत्रता है इस कसौटी पर हम शत–प्रतिशत भले ही खरे नही उतरे है, किन्तु महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया है।

देश की स्वतत्रंता के समय की भारतीय महिला और आज की भारतीय महिला में काफी बदलाव है। आज की मुस्लिम महिला भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र और स्वावलम्बी बनने को अग्रसर है। वह पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर आज देश की आर्थिक गतिविधियों में अपनी भागीदारी प्रदर्शित कर रही है। शिक्षा, स्वास्थ, उद्यमिता, सरकारी नौकरी तथा सामाजिक सरोकारों के सभी क्षेत्रों में आज ये महिलाएं अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

आज देश में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति प्रत्येक क्षेत्र में प्रगतिशील तो है किन्तु अभी हम लक्ष्य से बहुत दूर है मीलों चलना है। लिखित में कानून तो बहुत है किन्तु वास्तविकता के धरातल पर उनको अधिकार नहीं मिल रहे हैं मुस्लिम समाज की महिलाओं के जीवन स्तर में परिवर्तन की प्रक्रिया रूढ़िवादी बनी हुई है। परिणाम स्वरूप भूमण्डलीकरण के इस युग में अब तीव्र गति से सामाजिक परिवर्तन हो रहे है मुस्लिम समुदाय की महिलाओं के जीवन में परिवर्तन की गति बहुत धीमी है। जीवन स्तर में तीव्र परिवर्तन हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

सुझावः–

1. अन्य महिलाओं की तरह ही मुस्लिम महिलाओं को विकास के क्षेत्र में अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए।
2. मुस्लिम महिलाओं को सरकारी तथा गैर सरकारी योजनाओं में तथा प्रोन्नति में पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए।
3. मुस्लिम महिलाओं को तार्किक वैज्ञानिक एवं रोजगार परक शिक्षा का अवसर दिया जाना चाहिए।
4. मुस्लिम महिलाओं को अपने समाज में व्याप्त–रूढ़िवादी विचारों से हटकर आधुनिक विकास में आने का अवसर दिया जाना चाहिए।
5. मुस्लिम महिला को आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में विकास का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
6. इस्लाम धर्म की पवित्रता को बरकरार रखते हुए मुस्लिम महिलाओं को वर्तमान तार्किक दृष्टिकोण के आधार पर समाज में कार्य करना और शिक्षा तथा तालीम के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा के लिए भी प्रयास करने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. सय्यद जलालुद्दीन उभरी–2005 '' औरत और इस्लाम'' मर्कजी मकतब इस्लामी, नई दिल्ली।
2. एम.ए. सिद्दीकी–1982 ''वुमैन इन इस्लाम,, अदम पब्लिकेशन दिल्ली।
3. शहिदा लातिफ–मुस्लिम वुमैन इन इण्डिया पालिटिकल एण्ड नई दिल्ली।
4. जोया हसन ''हंस, भारतीय मुसलमान अगस्त 2013।
5. वीः एन. सिंह (नारीवाद पृ0सं0–200)
6. भारत में स्त्री असमानताः एक विमर्श, डॉ. गोया जोशी– हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली वि. वि. दिल्ली–110007।
7. जलालद्दीन–महिला इस्लामी समाज में मरकजी मकतबा इस्लामी, नई दिल्ली।

8. नारीवादी राजनीति–संघर्ष एवं मुद्दे साधना आर्यः– हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली।

9. द हिन्दू नई 2017 (दिल्ली संस्करण)

10. अमर उजाला –08 अक्टूबर 2016 (इलाहाबाद संस्करण)

11. हिन्दुस्तान – 12 फरवरी 2017 (लखनऊ संस्करण)

12. दैनिक जागरण –13 फरवरी 2017 (इलाहाबाद संस्करण)

13. जनसत्ता– फरवरी 2017।